अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय : '' 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन । '' 1 से 45

प्रस्तावना ।

1.1 कथावस्तु का स्वरूप ।

1.2 भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि

1.3 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन ।

1.4 बिस्रामपुर का संत उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा ।

समन्वित निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय : '' 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में पात्र और चरित्र-चित्रण का अनुशीलन । '' 46 से 94

प्रस्तावना ।

2.1 चरित्र-चित्रण का महत्त्व ।

प्रमुख पात्र

2.2 कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह ।

2.2.1 महत्त्वाकांक्षा ।

2.2.2 अतृप्त व्यक्तिमत्व ।

2.2.3 अपराध भावना से ग्रस्त ।

2.2.4 दूसरों के प्रति सोचने का ढंग ।

2.2.5 भोगवादी वृत्ति ।

2.2.6 कुंठा से ग्रस्त ।

2.2.7 पलायनवादी ।

2.2.8 भूदान में सामंतवादी दृष्टिकोण ।

2.3 सुंदरी ।

2.3.1 भूदान यज्ञ के प्रति वचनबद्ध ।

2.3.2 संवेदनशील तथा संयमी ।

2.3.3 त्यागी नारी ।

2.3.4 गूढ़ चरित्र ।

2.3.5 असफल प्रेमिका ।

2.3.6 शिष्टाचारी से परिपूर्ण नारी ।

2.3.7 कोमल व्यक्तित्व ।

2.3.8 समझदार ।

2.4 विवेक ।

2.4.1 बुद्धिजीवी और विचारशील ।

2.4.2 स्पष्टवादी युवक ।

2.4.3 शिष्टाचारी ।

2.4.4 वास्तववादी पात्र ।

2.4.5 समझदार युवक ।

2.4.6 नारी के प्रति श्रद्धाभाव ।

2.4.7 भूदान के प्रति वास्तववादी विचार ।

गौण पात्र

2.5 सुशीला ।

2.5.1 स्वतंत्र विचारवाली नारी ।

2.5.2 भ्रष्टाचार विरोधी नारी ।

2.5.3 स्पष्टवादी नारी ।

2.5.4 कठोर नारी ।

2.5.5 सच्ची समाजसेविका ।

2.5.6 विद्रोही नारी ।

2.6 निर्मल भाई ।

2.6.1 संवेदनशील ।

2.6.2 कुशल प्रवक्ता ।

2.6.3 सत्ता का दुरूपयोग ।

2.6.4 भयग्रस्त ।

2.7 दुबे महाराज ।

2.7.1 व्यसनाधीन ।

2.7.2 दुबे का मानसिक द्वंद्व ।

2.7.3 डरपोक तथा पलायनवादी ।

2.7.4 किसानों का शोषक ।

2.7.5 भ्रष्टाचारी ।

2.8 जयश्री ।

2.8.1 सौंदर्यवती ।

2.8.2 अतृप्त ।

2.8.3 परिवर्तनशील ।

2.9 जयश्री के पति ।

2.9.1 नौकरी पेशा तथा बुद्धिमान ।

2.9.2 पत्नी पर विश्वास रखनेवाला ।

2.9.3 असफल दांपत्य जीवन ।

2.10 रामलोटन ।

2.11 रेड्डी ।

2.12 रावसाहब ।

समन्वित निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय : '' 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में वातावरण का अनुशीलन '' 95 से 118

3.1 देशकाल वातावरण का स्वरूप ।

3.2 देशकाल के गुण ।

3.2.1 वर्णनात्मक सूक्ष्मता ।

3.2.2 विश्वसनीय कल्पनात्मकता ।

3.2.3 उपकरणात्मक संतुलन ।

3.3 देशकाल के भेद ।

3.3.1 सामाजिक वातावरण ।

3.3.2 तिलिस्मी एवं जासूसी वातावरण ।

3.3.3 प्राकृतिक वातावरण ।

3.3.4 भौगोलिक वातावरण ।

3.3.5 राजनीतिक वातावरण ।

3.3.6 ऐतिहासिक वातावरण ।

3.4 देशकाल और स्थानीय रंग ।

3.5 देशकाल वातावरण से तात्पर्य ।

3.6 'बिस्रामपुर का संत' में देशकाल वातावरण ।

समन्वित निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय : " 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में भाषा-शैली का 119 से 147 अनुशीलन । "

प्रस्तावना -

4.1 भाषा का स्वरूप ।

4.2 शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप ।

4.2.1 तत्सम शब्द ।

4.2.2 तद्भव शब्द ।

4.2.3 देशज शब्द ।

4.2.4 विदेशी शब्द ।

4.2.5 अरबी शब्द ।

4.2.6 फारसी शब्द ।

4.2.7 अंग्रेजी शब्द ।

4.2.8 अन्य शब्द ।

4.2.8.1 ध्वन्यार्थक शब्द ।

4.2.8.2 निरर्थक शब्द ।

4.2.8.3 अपशब्द ।

4.2.8.4 नए रचित शब्द ।

4.2.8.5 द्विरूक्त शब्द ।

4.2.9 मुहावरें ।

4.2.10 काव्य की पंक्तियाँ ।

4.3 शैली ।

4.3.1 वर्णनात्मक शैली ।

4.3.2 व्यंग्यात्मक शैली ।

4.3.3 आत्मकथनात्मक शैली ।

4.3.4 पत्रात्मक शैली ।

4.3.5 स्वप्नविश्लेषणात्मक शैली ।

4.3.6 नाटकीय शैली ।

4.3.7 फ्लॅश बॅक शैली ।

4.3.8 दृश्य शैली ।

समन्वित निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय : '' बिस्रामपुर का संत उपन्यास में उद्देश्य का अनुशीलन । '' 148 से 153

षष्ठ अध्याय : '' बिस्रामपुर का संत उपन्यास में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन । '' 154 से 179

प्रस्तावना ।

6.1 जातिभेद की समस्या ।

6.2 भ्रष्टाचार की समस्या ।

6.3 राजनीतिक नेताओं के कूटनीति की समस्या ।

6.4 राजनीतिक नेताओं की नौकरों पर दबाव जलने की समस्या ।

6.5 निम्न जाति के लोगों के शोषण की समस्या ।

6.6 नारी शोषण की समस्या ।

6.7 अकेलेपन की समस्या ।

6.8 असफल प्रेम की समस्या ।

6.9 , मूल्य टूटन की समस्या ।

6.10 नशापान की समस्या ।

6.11 गुंडई की समस्या ।

6.12 जमींदारी शोषण की समस्या ।

6.13 भूमि वितरण की समस्या ।

6.14 अवैध यौन-संबंधों की समस्या ।

6.15 आर्थिक समस्या ।

6.16 असफल दांपत्य जीवन की समस्या ।

समन्वित निष्कर्ष ।

उपसंहार **180 से 184**

संदर्भ ग्रंथ-सूची **185 से 186**